

## XXXII.

VĒ|NŪS| chĕr| chĕ| dĕ| s̄a| dĕ| l̄a| s̄o| n̄ a| n̄ f̄ant :

P̄r| mĕt| don| s̄ ę| lo| ię| r̄ a| k̄i| le| ran| dra,

Ę| kre| mant| me| na| sant| ki| lui| re| tięn| dra. <·

Dan| mon| ker| je| le| san| ka| chĕ| de| dan-| mœ.

5 Mœ| pœ| vřet !| Ke| fe| rĕ-| je ?| dœ-| j' a| mon| dam

L'an| ku| zĕr ?| Je| ne| ve| le| fi| s̄ o| fan| sĕr.

Le| f̄o| t-il| re| se| lĕr| la| mĕ| r' o| fan| sant ?

San| br̄u| lĕr| re| se| lĕr| le| fis| ne| p̄r̄ rœ :

Si| la| mĕ| re| le| sĕ| t̄ a| přes| j'a| rĕ-| pis :

10 Mal| vięn| dra| de| la| Mĕ| r' ę| mal| de| l'an| fant.

œs| si| mœ| de| se| lant| se| trĕi| tre| kar| son,

Par| lui| pis| ke| ja| mĕs| tre| tĕ| me| vĕ| rĕ. <·

Tięn| bon,| tięn| bo| n a| m̄r :| ne| sœr| de| mon| ker,

Plu| t̄ot| san| mi| le| mœrs| ke| vi| vre| san| tœ :

15 Se| le| mant (| je| te| pri)| mœ| dĕ| re| ton| fe. ·><· <·